आचार्य रामचंद्र शुक्ल की आलोचना

डॉ. अनामिका जैन
सहायक आचार्य
हिन्दी विभाग

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के आलोचनात्मक महत्वपूर्ण बिन्दु :

- हिन्दी में वैज्ञानिक आलोचना का सूत्रपात आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा माना जाता हैं |
- आचार्य रामचंद्र शुक्ल की पहली सैद्धांतिक आलोचना कृति " काव्य में रहस्यवाद" है | इनके अन्य सैद्धांतिक समीक्षा संबंधी कुछ लेख "रसमीमांस" तथा"चिंतामणि" (दो भागों) में संकलित हैं |
- आचार्य शुक्ल की समीक्षा संबंधी सैद्धांतिक दृष्टि

तुलसीदास के “रामचरितमानस” से प्रभावित है |

- आचार्य शुक्ल की व्यवहारिक समीक्षा का प्रौढतम रुप ‘तुलसी’ ‘भ्रमरगीतसार’ और ‘जायसी ग्रंथावली’ की भूमिका में मिलता है |
- इन्होंने “ हिंदी साहित्य का इतिहास “ लिख कर ऐतिहासिक आलोचना के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किया है |
- आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने ‘कला कला के लिए’ और ‘कला जीवन के लिए’ दोनों में सामंजस्य स्थापित करने का अभूतपूर्व प्रयास किया है

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने ‘रसवाद’ को आध्यात्मिक भूमि में उतारकर मनोवैज्ञानिक आधार पर प्रतिष्ठित किया |
- ,इन्होंने सैद्धांतिक और व्यवहारिक दोनों प्रकार की समीक्षाओं के माध्यम से रस सिद्धांत की प्रतिष्ठा की है |
- आचार्य शुक्ल ने ‘रसाभाव’ को रस की “मध्यमकोटि” कहा है तथा इसके भीतर ही ‘भावोदय’, ‘भावसंधि’, ‘भावसबलता’, ‘भावशांति’, ‘भावदशा’, ‘शीलदशा’ तथा ‘विभावानुभाव’ सहित संचारी भावों के स्वतंत्र वर्णन को भी स्थान दिया है |

- आचार्य शुक्ल ने रस की "मध्यमकोटि" की स्थापना शील , वैचित्र्य प्रधान काव्यों एवं नाटकों की समीक्षा के लिए तथा "निकृष्टकोटि" की स्थापना चमत्कार प्रधान काव्यों (चित्र और कूट- काव्यों) की समीक्षा के लिए की है |
- आचार्य रामचंद्र शुक्ल को हिंदी का पथिकृत आचार्य कहा जाता है |

धन्यवाद